प्रेरितों के काम
बर्मिंघम से सियाटल
डॉ. डेविड प्लैट, पासबान एन्ड्रयू आर्थर
13 मार्च, 2011

बर्मिंघम से सियाटल
प्रेरितों के काम 20:17–38

यदि आपके पास बाइबल है, और मेरी आशा है कि आपके पास है, तो मेरे साथ प्रेरितों के काम 20 निकालें। आज कलीसिया के लिए एक महान दिन है। लगभग दो वर्ष पहले, मैं एक साम्यवादी देश में पासबानों से मिला जो बहुत तेजी से कलीसियाओं की स्थापना कर रहे थे। जब हम इन सारी कलीसियाओं की स्थापना करने वाले इन पासबानों से बात कर रहे थे, तो वे सब मुझ से कहते, "आप जानते हैं कि प्रजनन न करने वाली कलीसिया स्वस्थ नहीं होती है।" मैं कहता, "हाँ, मैं जानता हूँ," और फिर मैं अपना सिर लटका कर वहाँ से चला जाता क्योंकि, वास्तविकता यह है कि एक कलीसिया के रूप में हम प्रजनन नहीं कर रहे हैं। यह स्वास्थ्य के अभाव की एक तस्वीर है।

वापस आकर मैं ने पुरनियों से बात की और हम वचन का अध्ययन करने लगे, और विश्वास के परिवार के रूप में हम बात करने लगे, "इन सबके बीच यह कैसा होगा?" हमने कलीसिया स्थापना की शुरूआत की। हमने कहा, "हम अपने बीच में से लोगों को प्रशिक्षित करके बाहर भेजेंगे और अपने बीच में लोगों के दलों को संसार के सुसमाचार से वंचित सन्दर्भों और उत्तरी अमरीका के सुसमाचार से वंचित सन्दर्भों में भेजेंगे।"

लगभग दो महीने पहले हमने अपने पहले कलीसिया स्थापक और उनकी पत्नी को भेजा और वे उत्तरी अमरीका में सुसमाचार से वंचित एक खतरनाक जाति के बीच में सुसमाचार को लेकर जाने वाले दल की अगुवाई करेंगे। विश्वास के परिवार के रूप में, हमने उन जातियों को गोद लिया है, और हम वहाँ कलीसिया स्थापना का हिस्सा बनना चाहते हैं। फिर, आज सुबह परमेश्वर ने हमें न केवल कलीसिया स्थापक और उनके परिवार को बल्कि एक पूरे दल को सियाटल में कलीसिया की स्थापना करने के लिए प्रार्थना करके भेजने का सौभाग्य दिया।

हम प्रेरितों के काम 20 में हैं, एक ऐसा समय जब पौलुस इफिसुस में कलीसिया के अगुवों से भेंट कर रहा है। हमेशा के लिए एक–दूसरे से विदा होने से पहले, वे एक साथ समय व्यतीत कर रहे हैं। यह पौलुस और कलीसिया के अगुवों के बीच एक आँसुओं से भरा, भावुक और सामर्थी समय है, जब वे विदा होने की तैयारी कर रहे हैं। मैं चाहता हूँ कि हम इस पद को पढ़ें। मेरे साथ प्रेरितों के काम 20:17 पर आएँ, और हम देखेंगे कि वहाँ पौलुस और इफिसुस के अगुवों के बीच क्या होता है।

मैं चाहता हूँ आप इसकी कल्पना करें। पिछले सप्ताह हमने इफिसुस के बारे में देखा था; पौलुस तीन वर्ष वहाँ रहा था। इसलिए, उसके घनिष्ट संबंध थे, और अब पौलुस यरूशलेम की ओर जा रहा है, और वह मिलेतुस में रूकता है, जो इफिसुस के निकट है। वह कहता है, "इफिसुस के अगुवों को आने के लिए कहो।" वे आते हैं, और वहाँ उससे मिलते हैं। ये इफिसुस के अगुवों से कहे गए पौलुस के अन्तिम शब्द हैं, जिनसे वह प्रेम करता था और जिनके साथ उसने समय व्यतीत किया था और अब वे विदा होने वाले हैं। मैं पौलुस की आँखों में और उसके चेहरे की ओर देखना चाहता हूँ वह अगुवों से यह कहता है।

पद 18 को देखें। लिखा है, *"जब वे उसके पास आए, तो उनसे कहा..."* पौलुस इन अगुवों से कहता है,

तुम जानते हो, कि पहले ही दिन से जब मैं आसिया में पहुँचा, मैं हर समय तुम्हारे साथ किस प्रकार रहा। अर्थात् बड़ी दीनता से, और आँसू बहा–बहाकर, और उन परीक्षाओं में जो यहूदियों के षड़यन्त्र के कारण मुझ पर आ पड़ी; मैं प्रभु की सेवा करता ही रहा। और जो जो बातें तुम्हारे लाभ की थीं, उनको बताने और लोगों के सामने और घर–घर सिखाने से कभी न झिझका। वरन् यहूदियों और यूनानियों के सामने गवाही देता रहा, कि परमेश्वर की ओर मन फिराना, और हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करना चाहिए। और अब देखो, मैं आत्मा में बँधा हुआ यरूशलेम को जाता हूँ, और नहीं जानता, कि वहाँ मुझ पर क्या–क्या बीतेगा? केवल यह कि पवित्र आत्मा हर नगर में गवाही दे देकर मुझ से कहता है, कि बन्धन और क्लेश तेरे लिए तैयार है। परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझताः कि उसे प्रिय जानूँ, वरन् यह कि मैं अपनी दौड़ को, और उस सेवकाई को पूरा करूँ, जो मैं ने परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर गवाही देने के लिए प्रभु यीशु से पाई है।

पद 24 को रेखांकित करें। यह एक सामर्थी वचन हैः

परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझताः कि उसे प्रिय जानूँ, वरन् यह कि मैं अपनी दौड़ को, और उस सेवकाई को पूरा करूँ, जो मैं ने परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर गवाही देने के लिए प्रभु यीशु से पाई है। और अब देखो, मैं जानता हूँ, कि तुम सब जिनसे मैं परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता फिरा, मेरा मुँह फिर न देखोगे। इसलिए मैं आज के दिन तुम से गवाही देकर कहता हूँ, कि मैं सब के लहू से निर्दोष हूँ। क्योंकि मैं परमेश्वर की सारी मनसा को तुम्हें पूरी रीति से बताने से न झिझका। इसलिए अपनी और पूरे झुण्ड की चौकसी करो; जिससे पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है; कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लहू से मोल लिया है। मैं जानता हूँ, कि मेरे जाने के बाद फाड़ने वाले भेड़िए तुम में आएँगे, जो झुण्ड को न छोड़ेंगे। तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे–ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी–मेढ़ी बातें कहेंगे। इसलिए जागते रहो; और स्मरण करो; कि मैं ने तीन वर्ष तक रात दिन आँसू बहा–बहाकर, हर एक को चितौनी देना न छोड़ा। और अब मैं तुम्हें परमेश्वर को, और उसके अनुग्रह के वचन को सौंप देता हूँ; जो तुम्हारी उन्नति कर सकता है, और सब पवित्रों में साझी करके मीरास दे सकता है। मैं ने किसी की चाँदी–सोने या कपड़े का लालच नहीं किया। तुम आप ही जानते हो कि इन्हीं हाथों ने मेरी और मेरे साथियों की आवश्यकताएँ पूरी कीं। मैं ने तुम्हें सब कुछ करके दिखाया, कि इस रीति से परिश्रम करते हुए निर्बलों को सम्भालना, और प्रभु यीशु की बातें स्मरण रखना अवश्य है, जो उसने आप ही कहा है; कि लेने से देना धन्य है।

यह कहकर उसने घुटने टेके और उन सब के साथ प्रार्थना की। तब वे सब बहुत रोए और पौलुस के गले में लिपट कर उसे चूमने लगे। वे विशेष करके इस बात का शोक करते थे, जो उसने कही थी, कि तुम मेरा मुँह फिर न देखोगे; और उन्होंने उसे जहाज तक पहुँचाया।

आधार...

हम एक साथ प्रभु की सेवा कर रहे हैं।

प्रेरितों के काम 20 के इस पद के साथ मैं दो आधारों को बताना चाहता हूँ। दो आधार जो प्रेरितों के काम 20 में व्याप्त हैं। पहलाः हम एक साथ परमेश्वर की सेवा कर रहे हैं। पद 18 और 19 में पौलुस कहता है, "तुम जानते हो, कि पहले ही दिन से जब मैं आसिया में पहुँचा, मैं हर समय तुम्हारे साथ किस प्रकार रहा... और प्रभु की सेवा करता ही रहा।" यह "सेवा" शब्द यूनानी भाषा के "डूलोस" से बना है, जिसका अर्थ है, दास। पौलुस के समय "दास" के लिए यही शब्द था, और पौलुस यहाँ और पूरे नये नियम में यह बताने के लिए इसी शब्द का प्रयोग करता है कि वह कौन है, और हम कौन हैं।

हम परमेश्वर के दास हैं। हम कलीसिया में हाजिरी लगाने वाले नहीं हैं, हम धार्मिक दिनचर्या वाले नहीं हैं; हम दास हैं, और परमेश्वर का दास होना अच्छा है। हम दास हैं। हम एक साथ परमेश्वर की सेवा कर रहे हैं; हम उसके दास हैं। हमारा जीवन उसका है।

हम एक साथ सुसमाचार को फैला रहे हैं।

दूसरा आधारः हम एक साथ परमेश्वर की सेवा कर रहे हैं, और हम एक साथ सुसमाचार को फैला रहे हैं। पौलुस कहता हैः परमेश्वर की सेवा करने के फलस्वरूप, वह घर–घर प्रचार कर रहा है, सार्वजनिक और निजी रूप में गवाही दे रहा है, पद 21 कहता है, वह *"यहूदियों और यूनानियों के सामने गवाही देता रहा, कि परमेश्वर की ओर मन फिराना, और हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करना चाहिए।"*

कलीसिया के रूप में हम यही कर रहे हैं। इस पूरे शहर में जहाँ भी परमेश्वर हमारी अगवाई करता है, हम गवाही देते हैं। हम परमेश्वर के प्रति मन फिराव और प्रभु यीशु मसीह में विश्वास की गवाही देना चाहते हैं। इसीलिए हम अपने शहर में हैं। इसीलिए अपने शहर में हमारी नौकरियाँ हैं। यहाँ हमारी नौकरी मुख्यतः धन कमाने और आराम से रहने के लिए नहीं है; हमारे पास नौकरी इसलिए है क्योंकि उसके द्वारा हम सुसमाचार की गवाही दे सकते हैं। हम यहाँ सुसमाचार को फैलाने के लिए हैं। इसीलिए हम इस शहर में हैं। संसार भर में हमारे सारे पद सुसमाचार को फैलाने के लिए हैं।

इसका मतलब यह है, यदि किसी समय प्रभु कहते हैं, "तुम किसी दूसरे सन्दर्भ में सुसमाचार का बेहतर प्रचार कर सकते हो," तो हम खुशी से जाते हैं। मेरा मतलब है, हम इस शहर से या इस नौकरी से या यहाँ की वास्तविकता से चिपके नहीं रहते हैं। नहीं। यहाँ हमारे जीवनों का उद्देश्य सुसमाचार को फैलाना है। इसीलिए हम साँस लेते हैं। अतः, संसार भर में जहाँ भी परमेश्वर हमें ले जाता है, हम जाने के लिए आजाद हैं। यही हम कर रहे हैं। हम एक साथ सुसमाचार को फैला रहे हैं। इसका हमें जितना अधिक अहसास होता है, उतने ही अधिक खाली चैक हम मेज पर रखते हैं, और पवित्र आत्मा हम में से उतने ही अधिक लोगों को संसार भर के विभिन्न सन्दर्भों में सुसमाचार को फैलाने के लिए अलग करेगा।

अतः, इस समय कलीसिया के सामने की वास्तविकता यह है। हम एक–दूसरे को भेजने में सक्रिय बनना चाहते हैं। मैं जानता हूँ कि यह सामान्य–बुद्धि के विपरीत प्रतीत होता है। आज कलीसिया का खेल, जहाँ तक संभव हो सके, अधिकाधिक लोगों को कलीसिया में लाना है, और हम कह रहे हैं कि हम अधिकाधिक लोगों को बाहर भेजना चाहते हैं। हाँ, बिल्कुल सही। हम चाहते हैं कि लोग सुसमाचार को फैलाने के लिए हर जगह जाएँ। लेकिन, वास्तविकता यह है। जब हम एक–दूसरे को भेजने में सक्रिय बनते हैं, तो हमें एक–दूसरे से अलग होने का दर्द सहना होगा।

यदि हम संसार भर में सुसमाचार को फैलाने के लिए अपने परिवारों और अपने जीवनों को दाँव पर लगाते हैं, तो हमें एक–दूसरे के साथ, एक ही कलीसिया में, एक ही आरामदायक जगह पर, जीवन भर के अच्छे संबंधों के अपने विचारों को छोड़ना पड़ेगा। वास्तविकता यह है कि जब प्रभु हमें बाहर भेजते हैं तो हमें एक–दूसरे से अलग होना पड़ेगा। और यह आसान नहीं होगा। यह उस दल के लिए आसान नहीं है जिसे हम हमारे बीच में से दूसरे सन्दर्भ में भेज रहे हैं। यह उन लोगों के लिए भी आसान नहीं होगा जो उस

दल को अच्छी तरह से जानते हैं। उस बहन के लिए भी यह आसान नहीं है जिसे हमने पिछले सप्ताह प्रार्थना करके भारत भेजा है।

इस भेजने का मतलब है, अलग होना, और यह हम सबके लिए बहुत बड़ी बात है, क्योंकि विश्वास के परिवार के रूप में जब तक हम सुसमाचार को फैलाने के लिए पृथ्वी की छोर तक जाते हैं, तब तक हमें अपने पास बैठने वाले व्यक्ति के साथ अपने संबंधों का बलिदान करने के लिए तैयार रहना होगा। मैं चाहता हूँ कि हम इस पद में यह महसूस करें। मैं चाहता हूँ कि हम उसे महसूस करें क्योंकि वास्तविकता यह है कि यदि हम जाने के लिए तैयार हैं, तो हमें अलग होना पड़ेगा और ऐसा करना आसान नहीं है।

परन्तु, खूबसूरती यह हैः एक–दूसरे के साथ पूरा अनन्तकाल हमारे सामने है। हमारे पास अनगिनत वर्ष हैं। हमारे पास समय है। भविष्य में हमारे पास समय ही समय होगा। यहाँ हमारे पास अधिकतम 70–80 साल हैं, और हमें यहाँ पर एक काम करना है। इसलिए, यहाँ हम सुसमाचार को फैलाना चाहते हैं। यदि प्रभु हमें 70–80 साल देते हैं तो हम उन्हें यहाँ के आराम में व्यतीत नहीं करना चाहते हैं। हम एक अलग संसार के लिए जी रहे हैं। यहाँ हम आग की तरह सुसमाचार को फैला रहे हैं। इसलिए, अनन्तकाल के विचार से अलग होने के दर्द का कोई मतलब नहीं है क्योंकि हम एक साथ रहेंगे।

पौलुस को यह आज्ञा मिलती है और उसे यह योग्यता भी मिलती है, जब यीशु उससे कहते हैं, "तू अन्यजातियों के पास जाएगा। और तू कष्ट सहेगा। तू बहुत अधिक कष्ट सहेगा।" पौलुस के बारे में आश्चर्यजनक बात यह है कि उन शब्दों को सुनने पर वह कभी भी अपना हाथ उठाकर आपत्ति नहीं करता है। मुझे यह पसन्द है कि वह एक बेहतर मार्ग के लिए सौदेबाजी नहीं करता है। मुझे यह पसन्द है कि वह कहता है, "ठीक है, यीशु, मैं समझता हूँ कि आप वास्तव में मसीह हैं; आप मुक्तिदाता हैं।" यह नहीं कि, "मैं आपके पीछे चलूँगा, लेकिन मैं केवल इस दिशा में आपके पीछे चलूँगा, उस दिशा में नहीं।"

पौलुस ने ऐसा नहीं किया, और हम इस परिच्छेद में उसकी झलक को देखते हैं कि उसने ऐसा क्यों नहीं किया, विशेषतः पद 22–24 में हम देखते हैं कि पौलुस की इच्छा और जीवन में उसका प्रमुख लक्ष्य अपने जीवन को अपने मुक्तिदाता की सेवा में लगाना था; और वह सुसमाचार को जातियों तक पहुँचाने के लिए कुछ भी सहने को तैयार था। क्योंकि पौलुस एक ऐसा व्यक्ति था जो किसी भी दूसरी बात से बढ़कर, वफादारी से अपने मुक्तिदाता की सेवा करना चाहता था, परमेश्वर के अनुग्रह को हल्के में नहीं लेता था, लेकिन परमेश्वर के अनुग्रह को स्वीकार करके उसके साथ जाता था।

पद 22 में देखें। वह कहता है, *"और अब देखो, मैं आत्मा में बँधा हुआ यरूशलेम को जाता हूँ, और नहीं जानता, कि वहाँ मुझ पर क्या–क्या बीतेगा? केवल यह कि पवित्र आत्मा हर नगर में गवाही दे देकर मुझ से कहता है, कि बन्धन और क्लेश तेरे लिए तैयार है। परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझताः कि उसे प्रिय जानूँ, वरन् यह कि मैं अपनी दौड़ को, और उस सेवकाई को पूरा करूँ, जो मैं ने परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर गवाही देने के लिए प्रभु यीशु से पाई है।"*

पौलुस के लिए अब परिस्थितियाँ बदलने वाली हैं। उसका मार्ग यरूशलेम से होकर जाता है, और उसकी सबसे बड़ी इच्छा विश्वासयोग्य बने रहना है। अतः, इस पद के प्रकाश में, मैं चाहता हूँ कि हम दूसरे सन्दर्भों में सेवा करने वालों के लिए निम्न प्रकार से प्रार्थना करें। ये सब वफादार रहने की हमारी इच्छा से संबंधित हैं। हम वफादारी से यीशु की सेवा करना चाहते हैं।

प्रार्थना करें कि हम अनिश्चितता के बीच में विश्वासयोग्य बने रहें।

प्रार्थना करें कि हम अनिश्चितता के बीच में विश्वासयोग्य बने रहें। पौलुस को कुछ बातों का निश्चय था और दूसरी कुछ बातों के बारे में वह कम निश्चित था। उसे पता था कि उसे क्या करना है; पद 24 में वह

इसे बताता है कि उसे परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार की गवाही देनी है। इस पल में, वह जानता है कि उसे कहाँ जाना है; आत्मा उसे यरूशलेम की ओर ले जा रहा है। उसे एक सामान्य जानकारी है कि वहाँ उसके साथ क्या होने वाला है। उसे पता है कि इसमें किसी प्रकार की कठिनाई और संघर्ष, किसी प्रकार का सताव और कष्ट शामिल होगा, परन्तु वह उसके विवरणों को नहीं जानता है; उसे पूरी जानकारी नहीं है कि वहाँ पहुँचने पर उसके साथ क्या होने वाला है।

क्या यही मसीही जीवन की लय नहीं है? हम अपना जीवन इस निश्चितता और अनिश्चितता के बीच बिताते हैं। मसीह का प्रत्येक अनुयायी कुछ बातों के बारे में निश्चित हो सकता है। पहला, हम अपने दिशा–निर्देश के बारे में निश्चित हो सकते हैं। दिशा–निर्देश हमेशा परमेश्वर देता है। हम जानते हैं कि हमें इस जीवन में क्या बनना है, और क्या करना है, जैसे पौलुस पद 24 के अन्त में कहता है, परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार की गवाही देना। उसके शब्द बिल्कुल उन्हीं शब्दों की प्रतिध्वनि हैं जिन्हें यीशु ने प्रेरितों के काम 1:8 में कहा था, "परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर उतरेगा तब तुम सामर्थ पाओगे और मेरे गवाह बनोगे।" गवाह गवाही देते हैं; और यीशु के गवाह परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार की गवाही देते हैं।

खुशखबरी यह है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में जैसे–जैसे यह कहानी आगे बढ़ती है, हम बार–बार इस प्रमुख कारण को देखते हैं कि पवित्र आत्मा चेलों को क्यों दिया गया है, वह विश्वासियों को क्यों भरता है, और वह कारण है, इस दिशा–निर्देश को पूरा करना। पवित्र आत्मा गवाही देने वाला आत्मा है। वह हमें गवाही देता है, हमें आश्वासन देता है कि हमने अनुग्रह पाया है; हमने उद्धार पाया है, और फिर वह दूसरों को गवाही देने के लिए, बोलने के लिए, हमारे सन्देश और इस कहानी को सुनाने के लिए हमें सामर्थ देता है। इसीलिए पवित्र आत्मा हमें दिया गया है।

अब, मैं आपको प्रोत्साहित करना या याद दिलाना चाहता हूँ कि यह मूलभूत रूप से एक मौखिक गतिविधि है। इसमें शब्दों के प्रयोग की जरूरत होती है; हमेशा से रही है, और हमेशा रहेगी। मैं जानता हूँ कि हम में से कुछ लोगों को संवाद के गैर–मौखिक रूप अधिक पसन्द हैं। हमें सेवा करना पसन्द है, हमें देना पसन्द है, हमें व्यवहारिक जरूरतों को पूरा करना पसन्द है, और यह सब अच्छा है। मैं किसी भी तरह से उस तरस के महत्व को कम नहीं करना चाहता हूँ जिसे सुसमाचार जरूरतों को पूरा करने और पड़ोसियों से अपने समान प्रेम करने के लिए हमारे अन्दर उत्पन्न करता है। सुसमाचार निश्चित रूप से उसे उत्पन्न करता है। परमेश्वर का अनुग्रह निश्चित रूप से उसके लिए बाध्य करता है, परन्तु मैं चाहता हूँ हम यह याद रखें कि हमारा प्राथमिक कार्य मौखिक है। यदि हम कभी भी इस कहानी को बताए और सुनाए बिना केवल इस प्रकार की गतिविधियों में संलग्न रहते हैं तो हमारे जीवन चेलों से अधिक परोपकारियों के समान होंगे। पवित्र आत्मा हमें इसलिए दिया गया है ताकि हम गवाही दें, गवाही देने वाले चेले बनें। अब, यह आप में से कुछ लोगों को असहज बना सकता है, क्योंकि शायद आपको अपने दोस्तों, अपने परिवारों, अपने साथ नौकरी करने वालों से बोलने और सुसमाचार सुनाने की अपनी योग्यता पर भरोसा नहीं है। परन्तु मैं आपको प्रोत्साहित करना चाहता हूँ कि यह ठीक है।

वास्तव में, यह किसी ऐसे व्यक्ति से बेहतर है जिसे सुसमाचार को सुनाने की अपनी योग्यता पर भरोसा है, क्योंकि यह आपको बाध्य करेगा, यह आपको परमेश्वर के आत्मा पर अधिक निर्भर होने के लिए मजबूर करेगा। आप बार–बार प्रार्थना करेंगे, "परमेश्वर मुझे अपने आत्मा से भर ताकि मैं बोल सकूँ।" फिर, वफादारी से अपना मुँह खोलकर बोलें। वास्तविकता यह है कि आप में से कुछ लोग अपने शेष जीवन में इस शहर में यही करने वाले हैं; आप यहाँ परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार की गवाही देने वाले हैं। फिर कुछ ऐसे हैं, जिन्हें परमेश्वर दूसरे स्थानों पर भेजेगा कि वे दूसरे सन्दर्भों में जाकर परमेश्वर के अनुग्रह की गवाही दें। दिशा–निर्देश हमेशा परमेश्वर देता है। कई बार वह लोगों को विशेष दिशा देता है। यही निश्चित रूप से पौलुस का उदाहरण है। वह जानता था कि उसे यरूशलेम जाना है।

मैं यह नहीं कह रहा हूँ हम सबको पौलुस के समान उतनी ही स्पष्टता से पता है। आप में से कुछ लोग शायद सोच रहे होंगे, "मैं ने तो इस शहर में आने का कोई आत्मिक निर्णय नहीं लिया था। मेरी नौकरी मुझे यहाँ लाई है। मेरा विद्यालय मुझे यहाँ लाया है। मेरा परिवार मुझे यहाँ लाया है। मेरा जन्म यहाँ हुआ है।" शायद आप सोच रहे होंगे कि क्या वफादारी आपके लिए संभव है? क्या आप परमेश्वर द्वारा दिए गए गंतव्य और दिशा की निश्चित जानकारी के बिना विश्वासयोग्य रह सकते हैं? उसका उत्तर है, "हाँ।"

यह पौलुस का उदाहरण है जब वह हमें दिखाता है कि विश्वासयोग्यता क्या है। यीशु के प्रति विश्वासयोग्यता का मतलब है, आप जहाँ भी हैं, पूरी तरह से वहाँ रहेंगे, चाहे वहाँ कैसे भी क्यों न पहुँचे हों। आप जहाँ भी हैं, पूरी तरह से वहाँ रहें। जब तक पौलुस इफिसुस में रहा, उसने इफिसियों की सेवा की। उसने अपना जीवन उन लोगों में लगाया। उसने उनकी सेवा की। उसने उनसे प्रेम किया। उसने उन्हें सिखाया। उसने अपना जीवन उनके साथ बाँटा। उसने यह सोचने में समय नहीं गँवाया कि किसी और जगह की बजाय वह वहाँ क्यों है।

मैं सोचता हूँ कि अपने स्वयं के दिमाग से बाहर न निकल पाने के कारण क्या आप भी यीशु के साथ अपनी यात्रा में लकवे का शिकार हो गए हैं। आप निरन्तर सोचते रहते हैं, "क्या मुझे यहाँ रहना चाहिए, या कहीं ओर रहना चाहिए?" क्या मेरी जगह यहाँ है या कहीं ओर है?" आप इन सवालों को पूछने और उनके बारे में प्रार्थना करने में इतने व्यस्त हैं कि आपकी वर्तमान सेवा लकवे का शिकार हो गई है। जबकि, विश्वासयोग्यता कहती है, कि आप जहाँ भी हैं, पूरी तरह से वहाँ रहें; अपनी सेवा को वर्तमान में विश्वासयोग्यता से पूरा करें।

फिर, आप में से कुछ लोग हैं जो इन प्रार्थनाओं को कर रहे हैं, आप अपने जीवन के लिए परमेश्वर की दिशा को देखने का प्रयास कर रहे हैं, आपको महसूस होता है कि कुछ बदलना शुरू हो रहा है, आपको कहीं ओर जाने की इच्छा हो रही है, लेकिन फिर आप अपने जीवन को देखते हैं और देखते हैं कि अभी तक परमेश्वर ने परिस्थितियों को पूरी तरह से तैयार नहीं किया है कि आप अपने इच्छानुसार स्थान पर रह सकें। यदि यह आपकी दशा है, तो मैं आपको प्रोत्साहित करना चाहूँगा कि अपनी भावी सेवकाई की इच्छा को अपने वर्तमान निवेश पर हावी होने की अनुमति न दें। विश्वासयोग्यता वास्तविक समय में प्रकट होती है। विश्वासयोग्यता आज के दिन की वास्तविकता है। इसलिए, जब तक आप यहाँ हैं, यहीं रहें। किसी दूसरी जगह परमेश्वर के अनुग्रह की गवाही देने के लिए प्रतीक्षा न करें; उसे अभी करें।

फिर, जब आपका मन फिरने लगता है, तो प्रभु आपके कदमों को दूसरे स्थान की ओर, दूसरे सन्दर्भ की ओर ले जाना शुरू करते हैं, और फिर, पौलुस के समान, जहाँ भी आप जाते हैं, पूरी तरह से जाएँ; अपना ध्यान परमेश्वर की दिशा पर रखें, और विश्वास के साथ उस पर चलते रहें। परन्तु, ऐसा करते समय ध्यान रखें कि परमेश्वर विवरण कभी–कभार ही देता है। वह हमेशा निर्देश देता है; कई बार वह दिशा देता है, परन्तु ऐसा बहुत कम होता है कि वह सार विवरण बताए कि उनकी यात्रा कैसी होगी, विशेषतः, आरम्भ में। हमारा परमेश्वर मार्ग में विवरण देता है।

दूसरे स्थानों पर जाने वाला दल इस समय इन बातों को सीख रहा है। बहुत से सवालों का कोई उत्तर नहीं है और बहुत से विवरणों की कोई जानकारी नहीं है। "हमारे घर कब बिकेंगे? हमें नौकरी कहाँ मिलेगी? हमारे बच्चे किस विद्यालय में जाएँगे? हमारे पड़ोसी कौन होंगे? हम यीश की आराधना करने के लिए कहाँ इकट्ठे होंगे? हम किस प्रकार शहर के लोगों की सेवा करेंगे?" बहुत से विवरणों की कोई जानकारी नहीं है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हम आगे बढ़ना रोक दें। आगे बढ़ने के लिए निश्चितता एक जरूरी शर्त नहीं है।

अतः, एक बार जब आपको महसूस हो जाता है कि परमेश्वर आपकी अगुवाई कर रहा है, तो उसके पीछे चलते रहें। हम जानते हैं कि परमेश्वर ने हमें एक निर्देश दिया हैः सुसमाचार की गवाही दो, और हमारा विश्वास है कि इस समय इससे हमें एक दिशा मिली है। जब हम आगे बढ़ते हैं, तो हमें भरोसा है कि मार्ग में वह विवरण देता जाएगा। इसीलिए हमारे पास नीतिवचन 3:5–6 जैसा एक अतुल्य, अद्‌भुत वचन है। हमें बताया गया है, *"तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन् सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना। उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिए सीधा मार्ग निकालेगा।"* इसीलिए हमारे नीतिवचन 16:9 है, *"मनुष्य मन में अपने मार्ग पर विचार करता है, परन्तु यहोवा ही उसके पैरों को स्थिर करता है।"* हमारा परमेश्वर मार्ग में विवरण देता है। इसलिए हम विश्वासयोग्यता से आगे बढ़ते हैं और अज्ञात का गुलाम बनने से इन्कार करते हैं। अज्ञात का गुलाम न बनें, और प्रार्थना करें कि हम भी ऐसे न बनें। प्रार्थना करें कि हम अनिश्चितता के बीच में वफादार रहें।

प्रार्थना करें कि हम कठिनाई के बीच में विश्वासयोग्य बने रहें।

प्रार्थना करें कि हम कठिनाई के बीच में विश्वासयोग्य बने रहें। पौलुस जानता था कि यरूशलेम में जाना कठिन होगा; पवित्र आत्मा ने उसके बारे में उसे बताया था। उसे बन्दीगृह और कष्टों का, शाब्दिक अर्थ में, जंजीरों और उपद्रव का सामना करना पड़ेगा, इसे जानते हुए भी, वह आगे बढ़ता रहा। पद 24 में देखते हैं वह ऐसा व्यक्ति था जो अपने जीवन की सुरक्षा और किसी भी अन्य बात से बढ़कर यीशु के प्रति विश्वासयोग्यता को महत्व देता था। यही वह व्यक्ति है जिसने कहा, "मैं यरूशलेम की ओर जा रहा हूँ और यदि वहाँ जाने का मतलब नीचे जाना है, तो मैं झूमते हुए नीचे जा रहा हूँ।" यही वह व्यक्ति है जिसने कहा, "मैं मुक्तिदाता के प्रति वफादार रहूँगा, और यदि वफादारी मुझे अकाल मृत्यु की ओर ले जाती है, तो ले जाने दो। क्योंकि मेरे लिए मसीह के प्रति वफादारी मेरे अपने जीवन से भी बढ़कर है।

ध्यान दें पद 23 में इन कष्टों, इन कारागृहों के बारे में बात करते समय वह कहता है कि हर नगर में पवित्र आत्मा उसे गवाही दे रहा है कि ऐसा होने वाला है। कष्ट उसकी प्रतीक्षा में हैं। वह इसे लूका और उसके साथियों पर लागू नहीं कर रहा है। निश्चित रूप से, उनका भी उन संघर्षों से सामना होगा। वे भी उस वेदना को सहेंगे जिसे पौलुस सहने वाला है, परन्तु वह स्वयं के बारे में बता रहा है।

मैं चाहता हूँ कि हम पौलुस की यरूशलेम यात्रा और हमारी अपनी जीवन यात्रा के बारे में सोचें। पौलुस के लिए मसीह की सेवा करना अपनी स्वयं की सुरक्षा से अधिक मूल्यवान था; मसीह के प्रति वफादारी अपने स्वयं के जीवन से अधिक मूल्यवान थी। यह एक ऐसे व्यक्ति का दृष्टिकोण है जो इस संसार के बाद आने वाले जीवन से प्रेम करता है। यही पौलुस के दृष्टिकोण का एकमात्र स्पष्टीकरण है। मैं सोच रहा हूँ कि क्या हमारा दृष्टिकोण भी ऐसा है। क्या हम मसीह के प्रति वफादारी को अपने स्वयं के जीवन से अधिक महत्व देते हैं? क्या हमारे लिए मसीह के प्रति वफादारी जीवन के आराम और निश्चितता से अधिक महत्वपूर्ण हैं? क्या हमारे लिए मसीह के प्रति वफादारी हमारी अपनी सुरक्षा से बढ़कर है, या कठिनाईयाँ बहुत आसानी से हमें मसीह की सेवा से भटका देती हैं?

यदि ऐसा है, तो शायद हमने पौलुस के दृष्टिकोण को नहीं अपनाया है। हमने शायद उसे नहीं देखा है जिसे वह देख रहा है। कुछ लोगों को यीशु ऐसे सन्दर्भों में भेज सकता है जहाँ जाना उनके जीवन के लिए अधिक खतरनाक हो सकता है, कुछ देशों में जाना, कुछ जातियों के बीच में सेवा करना, जीवन के लिए जोखिम बन सकता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि दूसरे स्थानों पर रहने वाले लोगों को अपने हिस्से का कष्ट नहीं सहना पड़ेगा।

किसी भी सन्दर्भ में मसीह की सेवा करना विभिन्न प्रकार की कठिनाईयों के लिए द्वार खोलता है। इस प्रकार की परिस्थितियों से परिवारों और विवाहों पर पड़ने वाले दबाव, तनाव और थकान के बारे में हमें गम्भीरता से विचार करने की जरूरत है। यह सब विभिन्न प्रकार के पापों और परीक्षाओं के लिए द्वार खोल सकता है,

इसलिए प्रार्थना करें कि इस यात्रा में उत्पन्न होने वाली किसी भी कठिनाई के बीच में हम विश्वासयोग्य बने रहें।

प्रार्थना करें कि कठिनाईयों के आने पर हमारा दृष्टिकोण उचित बना रहे। मेरे विचार में, जब जीवन में कठिनाईयाँ उत्पन्न होती हैं और मसीह के प्रति वफादारी को चुनौती देने लगती हैं तो प्रत्येक विश्वासी के जीवन में आने वाली परीक्षा यह है, कि हमारा दृष्टिकोण बदल जाता है। हम पद 24 में पौलुस की दृष्टि का पालन नहीं करते हैं। अपना ध्यान मुक्तिदाता पर लगाने की बजाय, हम अपनी परिस्थितियों, अपनी कठिनाईयों, अपनी असुविधाओं, और अपने कष्टों की ओर देखने और उन पर ध्यान केन्द्रित करने की परीक्षा में पड़ जाते हैं।

हम अपनी नजरों को परमेश्वर से हटा लेते हैं, और हम सीधे अपनी समस्याओं को देखने लगते हैं। विश्वासयोग्यता सीधे कठिनाईयों पर ध्यान नहीं देती है। कठिनाईयाँ आने पर मसीह के एक विश्वासयोग्य अनुयायी का दृष्टिकोण उन्हें देखने से "मना" करना है। "मैं अपनी आँखें ऊपर की ओर उठाऊँगा और मेरा ध्यान, मेरी विश्वास, मेरा प्रेम, मेरे मुक्तिदाता पर केन्द्रित करूँगा। मैं यह विश्वास रखूँगा कि उसे जानना, उसकी सेवा करना, उससे प्रेम करना, और उसकी आज्ञा मानना मेरे अपने जीवन से भी अधिक कीमती है, और चाहे कोई भी कठिनाई आए, मेरी आँखें प्रतिफल पर लगी हैं।"

हम ऐसा ही करना चाहते हैं। क्या आप प्रार्थना करेंगे कि हमारी आँखें हमारे विश्वास के कर्ता और सिद्ध करने वाले मसीह पर लगी रहें, जिसने अपने सामने रखे आनन्द की खातिर क्रूस की निन्दा को सह लिया और सिंहासन पर पिता के दाहिने बैठ गया। हे परमेश्वर, क्या आप ऐसे दृष्टिकोण के लिए हमें अनुग्रह देंगे? ताकि हम यीशु को देखें और उसकी सेवा करने के आनन्द को मार्ग में आने वाली किसी भी कठिनाई से अधिक मूल्यवान समझें।

यह परिच्छेद पौलुस द्वारा पुरनियों को उपदेश देने के साथ समाप्त होता है। और दूसरे सन्दर्भों में जाने वालों को मैं यह उपदेश देना चाहता हूँ।

दूसरों के उद्धार के लिए जाएँ।

दूसरों के उद्धार के लिए जाएँ। प्रेरितों के काम 20:26 में पौलुस कहता है, *"इसलिए मैं आज के दिन तुम से गवाही देकर कहता हूँ, कि मैं सब के लहू से निर्दोष हूँ।"* इसका क्या मतलब है? "मैं तुम्हारे लहू से निर्दोष हूँ।" मैं चाहता हूँ आप जल्दी से यहेजकेल 33 पर आएँ। मैं आपको यह तस्वीर दिखाना चाहता हूँ, पुराने नियम की यह तस्वीर जिसकी ओर पौलुस नये नियम में संकेत कर रहा है।

पौलुस के लिए इफिसुस के लोगों को देखकर यह कहने का क्या मतलब है कि, "मैं तुम सबके लहू से निर्दोष हूँ?" मैं चाहता हूँ आप यहेजकेल 33:1 को देखें, और सुनें यहोवा यहेजकेल से क्या कहता है। यहेजकेल 33:1 कहता है, *"यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा: 'हे मनुष्य के सन्तान, अपने लोगों से कह,"* अब पद 2 से देखें।

> *"जब मैं किसी देश पर तलवार चलाने लगूँ, और उस देश के लोग किसी को अपना पहरुआ करके ठहराएँ, तब यदि वह यह देखकर कि इस देश पर तलवार चला चाहती है, नरसिंगा फूँककर लोगों को चिता दे, तो जो कोई नरसिंगे का शब्द सुनने पर न चेते और तलवार के चलने से मर जाए, उसका खून उसी के सिर पड़ेगा। उस ने नरसिंगे का शब्द सुना, परन्तु न चेता; सो उसका खून उसी को लगेगा। परन्तु, यदि वह चेत जाता, तो अपना प्राण बचा लेता। परन्तु, यदि पहरुआ यह देखने पर कि तलवार चला चाहती है नरसिंगा फूँककर लोगों को न चिताए, और तलवार के चलने से उन में से कोई मर जाए,*

तो वह तो अपने अधर्म में फँसा हुआ मर जाएगा, परन्तु उसके खून का लेखा मैं पहरुए ही से लूँगा।

इसलिए, हे मनुष्य के सन्तान, मैं ने तुझे इस्राएल के घराने का पहरुआ ठहरा दिया है; तू मेरे मुँह से वचन सुन–सुनकर उन्हें मेरी ओर से चिता दे। यदि मैं दुष्ट से कहूँ, हे दुष्ट, तू निश्चय मरेगा, तब यदि तू दुष्ट को उसके मार्ग के विषय न चिताए, तो वह दुष्ट अपने अधर्म में फँसा हुआ मरेगा, परन्तु उसके खून का लेखा मैं तुझी से लूँगा। परन्तु यदि तू दुष्ट को उसके मार्ग के विषय चिताए कि वह अपने मार्ग से फिरे और वह अपने मार्ग से न फिरे, तो वह तो अपने अधर्म में फँसा हुआ मरेगा, परन्तु तू अपना प्राण बचा लेगा।"

यह यहेजकेल 33 की तस्वीर है। फिर, हम पौलुस को यह कहते हुए देखते हैं, "मैं तुम्हारे लहू से निर्दोष हूँ।" यदि आप प्रेरितों के काम 18:6 में देखते हैं, एक बार पौलुस कुरिन्थ में था और यहूदियों ने उसे आराधनालय से निकाल दिया था, और वह फिरकर उनसे कहता है, "मैं तुम सबके लहू से निर्दोष हूँ। मैं ने प्रचार किया, तुमने मुझे बाहर निकाल दिया; मैं निर्दोष हूँ।" तस्वीर यह हैः यदि आपके पास कोई ऐसी सूचना है जो किसी को विनाश से बचा सकती है, और आप वह सूचना देते हैं, आप वह चेतावनी देते हैं, और लोग चेतावनी को नहीं सुनते हैं, कोई जवाब नहीं देता है, तो आप उनके लहू से निर्दोष हैं। यहेजकेल 33 हमारी जिम्मेदारी की एक तस्वीर देता है। यदि आपके पास आने वाले दण्ड की सूचना है, और आप चुप रहते हैं, तो वह व्यक्ति अपने पाप में मर जाएगा, और उसका लहू आपके सिर लगेगा। यह एक भारी वचन है।

यदि आप जापान में हैं और आप का कार्य सायरन बजाना और चेतावनी देना है, और आपने सुनामी को आते हुए देखा, और सुनामी के आने की जानकारी होते हुए भी आपने सायरन नहीं बजाया, और सुनामी आकर उस नगर को बहा ले जाती है, तो उनका लहू आपके सिर लगेगा। इसीलिए पौलुस यह कहता है और दूसरे सन्दर्भों में जाने वालों के लिए हमारा उपदेश है। आप चुप रहने के लिए नहीं जा रहे हैं; आप चेतावनी देने के लिए जा रहे हैं। परमेश्वर के क्रोध की सुनामी का लक्ष्य पापी हैं, और मसीह ने पापियों की जगह मूल्य चुका दिया है। आप इसे जानते हैं। इसलिए, जाकर खतरे की घण्टी बजाओ और लोगों के लहू से निर्दोष रहो। यह हम सबके लिए है। हम पूरे शहर में परमेश्वर की दया के सायरन को बजाना चाहते हैं, और इस प्रक्रिया में हम यह कहने में समर्थ होना चाहते हैं, "कि हम लहू से निर्दोष हैं।" यहाँ यही तस्वीर है। इसलिए, दूसरों के उद्धार के लिए जाएँ।

परमेश्वर के वचन के साथ जाएँ।

आप इसे करेंगे कैसे? आप परमेश्वर के वचन के साथ जाएँ। इसी तरह पौलुस निर्दोष बना था। पद 26 में वह कहता है कि वह निर्दोष था, और फिर पद 27 में वह इसका कारण बताता है कि यह परमेश्वर के वचन की पूरी शिक्षा देने से पीछे न हटने के कारण था। इसीलिए वह घर–घर में और सबके सामने परमेश्वर के वचन का प्रचार करता था।

तस्वीर यह है; इसी तरह आप इस वचन के द्वारा खतरे की घण्टी बजाते हैं। आप इस वचन के साथ जाएँ और आपके पास देने के लिए और कुछ नहीं केवल यह वचन है। आपके पास देने के लिए और कुछ नहीं केवल यह वचन है, परन्तु यह वचन अच्छा है, और इसलिए इसका प्रचार करें। जब भी अवसर मिले, इसका प्रचार करें। दूसरों के उद्धार के लिए परमेश्वर के वचन के साथ जाएँ।

अपने मनों की रक्षा करें।

जाते समय, अपने मनों की रक्षा करें। पद 28 कहता है, "अपनी चौकसी करो।" एक और वचन निकालेंः प्रकाशितवाक्य 2, नये नियम की अन्तिम पुस्तक। अपने मनों की रक्षा करें। प्रकाशितवाक्य 2 इफिसुस की

कलीसिया के लिए मसीह का पत्र है। इफिसुस यहाँ बताई गई सात कलीसियाओं में से एक है। मसीह इफिसुस की कलीसिया से कहता है। पौलुस ने पुरनियों से कहा, "अपनी चौकसी करो। अपने मनों की चौकसी करो।" और सुनें मसीह उसके कुछ समय बाद इफिसुस की कलीसिया से क्या कहता है।

प्रकाशितवाक्य 2:2: *"मैं तेरे काम, और तेरे परिश्रम, और तेरे धीरज को जानता हूँ: और यह भी कि तू बुरे लोगों को देख नहीं सकता, और जो अपने आप को प्रेरित कहते हैं, और हैं नहीं, उन्हें तू ने परखकर झूठा पाया।"* वे सिद्धान्तों में दृढ़ थे और झूठी शिक्षा के विरूद्ध चेतावनी देते थे। *"तू धीरज धरता है, और मेरे नाम के लिए दुख उठाते–उठाते थका नहीं।"* ऐसा लग रहा है कि वे उन्नति कर रहे हैं, परन्तु पद 4 को सुनें। *"पर मुझे तेरे विरूद्ध यह कहना है कि तू ने अपना पहला सा प्रेम छोड़ दिया है।"* कुछ अनुवादों में लिखा है, "तू ने अपना पहला प्रेम छोड़ दिया है।" निश्चित रूप से, यह हमें से अधिकाँश लोगों की तस्वीर है। हम व्यस्त लोग हैं जो बहुत कुछ करते हैं, कलीसिया में भी बहुत कुछ करते हैं, हम बहुत से अच्छे कार्य करते हैं; परन्तु हम सबके लिए सबसे प्रमुख सवाल है कि, "आपका मन कहाँ है? आपके मन कहाँ हैं?" आपका मन मसीह के पास है।

अपने मन की रक्षा करो। मसीह के साथ अपनी घनिष्टता की रक्षा करो, क्योंकि वास्तविकता यह है कि विरोधी हमारे बीच में आएगा और कलीसिया में आएगा और हर मोड़ पर हमारे मनों को परमेश्वर से दूर खींचने की कोशिश करेगा। हमारे मनों को भटकाने के बाद, फिर वह हमें नष्ट कर सकता है और तबाही मचा सकता है। इसलिए, अपने मनों की रक्षा करें।

कलीसिया की देखभाल करें।

फिर, अपने मनों की चौकसी के साथ, कलीसिया की देखभाल करें। अपने आप पर ध्यान दें और अपने झुण्ड पर ध्यान दें, यह एक बड़ी तस्वीर है। इसे ही हम पूरे पवित्रशास्त्र में देखते हैं। परमेश्वर के लोगों को अक्सर झुण्ड कहा जाता है। यह परमेश्वर का झुण्ड है।

वह इन पुरनियों से कहता है, *"पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है; कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो।"* कलीसिया के अगुवो: याद रखो कि कलीसिया परमेश्वर की है। इसलिए, यद्यपि कलीसिया के अगुवों का अधिकार सर्वोपरि नहीं है, परन्तु वे अधीनस्थ चरवाहे हैं। एक प्रधान चरवाहा है, एक अच्छा चरवाहा है, एक महान चरवाहा है, जो कलीसिया के ऊपर अधिकारी है। कलीसिया उसकी है। यही यहाँ दी गई सम्पूर्ण तस्वीर है। 1 पतरस 5 और इब्रानियों 13 में, परमेश्वर अपने लोगों को लेता है; वह अपने लोगों के ऊपर चरवाहा है, और वह उन्हें लेकर उनकी आत्माओं की देखभाल के लिए अधीनस्थ चरवाहों, पासबानों और अध्यक्षों को सौंपता है।

इसलिए, कलीसिया की देखभाल करें क्योंकि कलीसिया परमेश्वर की है। यह आपकी कलीसिया या मेरी कलीसिया या हमारी कलीसिया नहीं है, यह परमेश्वर की कलीसिया है। हम उसकी कलीसिया हैं। इसलिए याद रखें, कलीसिया परमेश्वर की है, और याद रखें कि कलीसिया उसके द्वारा खरीदी गई है। परमेश्वर की कलीसिया, जिसे उसने अपने स्वयं का लहू देकर खरीदा है। मसीह और उसके ईश्वरत्व के बारे में कितना आश्चर्यजनक कथन है कि उसने कलीसिया को अपने स्वयं का लहू देकर खरीदा है।

जब हम यह देखते हैं कि मसीह ने अपने द्वारा खरीदी गई भेड़ों को कितना अधिक महत्व दिया है तो यह कलीसिया के बारे में हमारे दृष्टिकोण को पूरी तरह से रूपान्तरित कर देता है। पवित्रशास्त्र द्वारा परमेश्वर के लोगों को भेड़ के रूप में बताने की इस तस्वीर के बारे में रूचिकर बात यह है कि हम सब लोग भेड़ को एक अच्छा और प्यारा सा प्राणी मानते हैं। परन्तु ऐसा नहीं है। यदि आपके मन में ऐसी तस्वीर है, तो साफ है कि आप कभी भेड़ों के आस–पास नहीं रहे हैं। भेड़ें गन्दगी, कीड़ों और जूओं से भरी होती हैं। उन्हें साफ करने के लिए विभिन्न रसायनों का प्रयोग करना पड़ता है। भेड़ एक जिद्दी, मूर्ख और बुद्धू जीव है, और

यह हमें नम्र करने वाला है जब हमें यह अहसास होता है कि सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र में हमारा वर्णन करने के लिए इसी तस्वीर का प्रयोग किया गया है। पवित्रशास्त्र कभी भी ऐसा नहीं कहता है कि वे "शेर या चीते या तेंदुए या घोड़े हैं।" नहीं, हम सबसे बुद्धू जीव हैं। "मेरे लोग भेड़ें हैं।" इन सारी बातों के कारण, भेड़ के साथ रहना आसान नहीं होता है। यही खूबसूरती है। मसीह ताकतवर और सफल लोगों की खातिर नहीं परन्तु कमजोर और पापी लोगों की खातिर मरने के लिए आया; शुद्ध लोगों की खातिर नहीं, परन्तु गन्दगी से भरे लोगों की खातिर मरने के लिए आया।

यह कई बार कलीसियाई जीवन को एक चुनौती बना देता है, क्योंकि आप एक ऐसी कलीसिया के सदस्य होंगे जो बुद्धू और जिद्दी लोगों से भरी है। मैं आपको एक रहस्य बताना चाहता हूँ: कलीसिया बुद्धू और जिद्दी लोगों से भरी है, जिनमें मैं सबसे बड़ा हूँ, परन्तु मसीह ने अपने स्वयं के लहू से उनके लिए मूल्य चुकाया है, और इसलिए मैं उनसे प्रेम करना चाहता हूँ, और आपको भी उनसे उसी प्रकार प्रेम करने के लिए कहता हूँ जैसे अपने लहू से उन्हें खरीदने वाला मुक्तिदाता उनसे प्रेम करता।

सावधान रहें।

कलीसिया की देखभाल करें, और सावधान रहें। हाँ, चरवाहों को झुण्ड को तृप्त करना है और झुण्ड की देखभाल करनी है, और झुण्ड की रक्षा भी करनी है। पौलुस कहता है, *"मैं जानता हूँ, कि मेरे जाने के बाद फाड़ने वाले भेड़िए तुम में आएँगे, जो झुण्ड को न छोड़ेंगे। तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे–ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी–मेढ़ी बातें कहेंगे।"*

बात यह है: शैतान छुट्टियाँ नहीं मनाता है, और इसलिए आप भी नहीं मना सकते हैं। अपने परिवार के साथ विश्राम का समय व्यतीत करने के अर्थ में नहीं, परन्तु हम कभी भी अपने निहत्थे नहीं रह सकते हैं। विरोधी हर समय आक्रमण करता है। इस पल, वह आक्रमण कर रहा है। इसलिए कलीसिया में अगुवे सतर्क रहते हैं; वे सावधान हैं। पद 31 कहता है, "इसलिए जागते रहो।"

चारों ओर से, कलीसिया के बाहर से आपको सताव का सामना करना होगा। इसलिए पौलुस कहता है, "खुली आँखों के साथ जाओ।" यानि, यह आसान नहीं होगा। आपको कलीसिया के बाहर से सताव का सामना करना होगा, और कलीसिया के अन्दर सताव का सामना करना होगा। कलीसिया के बाहर से होने वाला सताव स्पष्ट हो सकता है। और कलीसिया के अन्दर का सताव खतरनाक रूप से कपटपूर्ण हो सकता है। इसीलिए पौलुस विशेष रूप से कहता है, "फाड़ने वाले भेड़िए तुम में आएँगे।" और पद 30 कहता है, "तुम्हारे बीच में से भी।"

क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं?

पौलुस समर्पित पुरनियों के एक समूह से कह रहा है, *"तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे–ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी–मेढ़ी बातें कहेंगे।"* एक प्रकार से पौलुस यह कह रहा है कि "तुम अपने आप पर भी भरोसा नहीं कर सकते।" एक अर्थ में वह यही कह रहा है।

समर्पित रहें।

अगली बात है: समर्पित रहें। वह कहता है, "बाहर और अन्दर से आने वाले आगामी खतरों के प्रकाश में, अब," पद 32, *"मैं तुम्हें परमेश्वर को, और उसके अनुग्रह के वचन को सौंप देता हूँ।"* यह पौलुस का उत्तर है।

मैं तुम्हें परमेश्वर और उसके अनुग्रह के वचन को सौंप देता हूँ। इसलिए, समर्पित रहो। इसी तस्वीर को हमने पहले प्रेरितों के काम 6 में देखा था जब कलीसिया बढ़ रही थी और प्रेरितों ने कहा, "हमें प्रार्थना और

वचन की दो–स्तरीय सेवकाई को सुरक्षित रखने की जरूरत है। हमें परमेश्वर के साथ रहना है, और हमें परमेश्वर के वचन में रहना है।" कलीसिया इन दो खम्भों के प्रति समर्पित होनी चाहिए।

इसलिए, आपके लिए मेरी प्रेरणा है कि आप इन दोनों खम्भों को दृढ़ रखें। प्रार्थना में थकें नहीं। परमेश्वर के लिए आप अपने स्वयं के बल पर क्या कर सकते हैं? कुछ भी नहीं। इसलिए, आपके बीच में प्रार्थना का स्थान कभी कम न होने पाए। प्रार्थना हमेशा मूलभूत रहे। परमेश्वर पर विश्वास रखें, उसकी सामर्थ में, उसकी महानता में, उसकी बुद्धि में, और उसके ज्ञान में निश्चिन्त रहें। उसे गहराई से जानें और पूरे दिल से उस पर भरोसा रखें। प्रार्थना में परमेश्वर के प्रति समर्पित रहें, और वचन की सेवकाई के प्रति समर्पित रहें।

अनुग्रह का वचन ही हर जगह कार्य करता है। इस वचन में कलीसिया को बनाने और उन सब लोगों के बीच में मीरास देने की ताकत है, जो शुद्ध किए हुए हैं। इसलिए, इस अनुग्रह के वचन पर भरोसा रखें, और सुसमाचार पर भरोसा रखें। मुझे कोई सन्देह नहीं है कि सुसमाचार के सामने चुनौतियाँ हैं, परन्तु वास्तविकता यह है कि यह सुसमाचार पिछले 2,000 वर्षों से अच्छी तरह कार्य करता आया है, और आपका शहर इसे रोक नहीं सकता है। इसलिए, इस सुसमाचार पर भरोसा रखें। इस सुसमाचार को रोका नहीं जा सकता है।

निःस्वार्थ भावना से दें।

अन्तिम दो उपदेश इस प्रकार हैं: निःस्वार्थ भावना से दें। इसके ठीक बाद पौलुस कहता है, *"मैं ने किसी की चाँदी, सोने या कपड़े का लालच नहीं किया।"* ऐसा प्रतीत हो सकता है कि यह बात इस जगह के लिए उपयुक्त नहीं है, लेकिन हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है, क्योंकि आर्थिक त्याग हमारे लिए इस तस्वीर का हिस्सा है। यह हमारे लिए महत्वपूर्ण है। पौलुस कहता है, "लोभ और लालच और भौतिकता कलीसिया को नष्ट कर देंगे।"

इसलिए, उनसे सावधान रहो। भौतिकता, लाभ, अधिक वस्तुओं की इच्छा, लालच, लोभ से सावधान रहो। इन सबसे सावधान रहो। निःस्वार्थ भावना से दो। लेने से देना धन्य है। यह आपका मंत्र बन जाए।

त्यागपूर्वक जाएँ।

अन्तिम बात, त्यागपूर्वक जाएँ। इस अन्तिम भाग में, मैं चाहता हूँ कि आप भावनात्मक तीव्रता की तस्वीर को देखें। लिखा है, *"यह कहकर उसने घुटने टेके और उन सब के साथ प्रार्थना की। तब वे सब बहुत रोए और पौलुस के गले में लिपट कर उसे चूमने लगे।"* यह उनके इकट्ठे होने की तस्वीर है।

निष्कर्ष ...

प्रेरितों के काम 20 के अन्त में हम परमेश्वर के लोगों के बीच जुदाई की पीड़ा को देखते हैं। सुसमाचार के प्रसार के लिए जुदाई, और यह हमें फिर से वहीं लेकर आता है जहाँ से हमने शुरूआत की थी: दो निष्कर्ष:

हम परमेश्वर के सुसमाचार की प्रगति के लिए अस्थाई रूप से एक–दूसरे से अलग होते हैं।

पहला निष्कर्ष है, हम परमेश्वर के सुसमाचार की प्रगति के लिए अस्थाई रूप से एक–दूसरे से अलग होते हैं। मसीही लोग यही करते हैं। सुसमाचार को फैलाने की इच्छा रखने वाले मसीही ऐसा ही करते हैं।

वे अपने आप को आसान जीवनों और रिश्तों में घेरकर नहीं रखते हैं, जो हमेशा आरामदायक रहते हैं। नहीं, हम सुसमाचार के साथ आगे बढ़ते हैं। बहुत से लोगों को सुसमाचार की जरूरत है, इसलिए हम सुसमाचार

को लेकर चल रहे हैं। कुछ मामलों में, हम इस प्रकार आगे बढ़ रहे हैं कि हम उन लोगों से फिर कभी नहीं मिलेंगे। प्रेरितों के काम 20 में पौलुस यही कहता है। अब, परमेश्वर के अनुग्रह से हमारे पास संवाद और यात्रा के लिए आधुनिक साधन हैं। इसलिए, संभावना है कि यदि परमेश्वर की इच्छा हो तो हम अपने भाइयों और बहनों से फिर मिलेंगे, इसलिए यह दूरी, यह जुदाई इतनी कठिन नहीं है।

परन्तु, चाहे हमारे पास ये सारे साधन नहीं होते, तब भी यदि आप इस कथन के बारे में सोचते हैं कि, "वे विशेष करके इस बात का शोक करते थे, जो उसने कही थी, कि तुम मेरा मुँह फिर न देखोगे," तो यह भी तस्वीर का केवल एक हिस्सा है। हाँ, वे यहाँ एक–दूसरे का मुँह नहीं देखेंगे, और हाँ, संभावना यह भी है कि शायद हम भी अपने उन भाइयों और बहनों से दोबारा न मिल सकें जिन्हें छोड़कर हम जा रहे हैं, परन्तु हम सुसमाचार की प्रगति के लिए अस्थाई रूप से एक–दूसरे से अलग होते हैं।

हम परमेश्वर की महिमा की स्तुति के लिए अनन्तकाल के लिए एक साथ एकत्रित होंगे।

हम परमेश्वर की महिमा की स्तुति के लिए अनन्तकाल के लिए एक साथ एकत्रित होंगे। अरबों, खरबों वर्षों के लिए हम हर जगह के लोगों की एक बड़ी सेना के साथ परमेश्वर की स्तुति गाते रहेंगे। इसलिए, बाहर जाते और अलग होते समय हम उस दिन की इच्छा रखते हैं।

Permissions: You are permitted and encouraged to reproduce and distribute this material provided that you do not alter it in any way, use the material in its entirety, and do not charge a fee beyond the cost of reproduction. For web posting, a link to the media on our website is preferred. Any exceptions to the above must be approved by Radical.

Please include the following statement on any distributed copy: By David Platt. © David Platt & Radical. Website: Radical.net